उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 235/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 30.05.2024

दिनांक	:	30 मई, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की पंचम् बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की पंचम् बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 30 मई, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक व उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में राहत आयुक्त के प्रतिनिधि; गन्ना विभाग; बांदा, कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक; शुआट्स प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

मानसून 2024 की प्रगति

- दक्षिण पश्चिम मानसून आज 30 मई, 2024 को दक्षिण भारत के केरल में प्रवेश कर गया एवं इसकी बंगाल की खाड़ी की शाखा ने उत्तर पूर्वी भारत के अधिकांश भाग को अच्छादित कर लिया।
- मानसून 2024 के दौरान उत्तर प्रदेश के अधिकांश स्थानों पर कुल समेकित मानसूनी वर्षा सामान्य अथवा सामान्य से अधिक रहने की संभावना है।

प्रथम सप्ताह (31 मई से 06 जून, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रथम सप्ताह 31 मई से 06 जून, 2024 के दौरान प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में तड़ित झंझावात/वज्रपात एवं तेज झोंकेदार हवाओं (30 से 50 कि.मी./घंटा)/आंधी के साथ कहीं–कहीं छुटपुट से हल्की वर्षा होने की संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र तथा पूर्वी मैदानी क्षेत्र के संलग्न उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आशिंक रूप से अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।
- प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस; दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 42 से 44 डिग्री सेल्सियस से जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 40–42 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। यद्यपि किसी दिन विशेष में यह उक्त सीमा से कम या ज्यादा हो सकता है।

द्वितीय सप्ताह (07 जून से 13 जून, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (07 जून से 13 जून, 2024) के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में कोई प्रभावी वर्षा होने की संभावना नहीं है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा भाभर तराई क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से अधिक रहने की संभावना है। जिसके कारण प्रदेश में पुनः लू की परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं।

- प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 38 से 40 डिग्री सेल्सियस; पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा भाभर तराई एव पूर्वी मैदानी क्षेत्र के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस, जबकि प्रदेश के अन्य भागों मे औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 42 से 45 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। यद्यपि किसी दिन विशेष में यह उक्त सीमा से कम या ज्यादा हो सकता है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- विलम्ब से रोपे जाने वाले धान के खेतों में हरी खाद के लिए ढैंचा की बुआई यदि अभी तक नही की है तो यथाशीघ्र करें। सभी जनपदों में कृषि विभाग के गोदामों पर ढैंचा का बीज उपलब्ध है।
- शोधित बीज का ही प्रयोग करें।
- सरकार की प्राथमिकताओं के दृष्टिगत मोटा अनाज जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, सावां, कोदों आदि की खेती को महत्ता दी जाय। इन फसलों की खेती से मौसम के कुप्रभाव से भी बचाव किया जा सकता है।
- नर्सरी में अधिक अवधि (145 दिन से ज्यादा) की धान की प्रजातियों की बुआई पहले तथा मध्यम (130 से 140 दिन) व कम अवधि (115 से 120 दिन) की बुआई क्रमशः बाद में करें।
- धान की नर्सरी कुछ दिनों के अन्तराल पर डालें ताकि मौसम की अनिश्चितताओं से बचा जा सके।
- नर्सरी में पानी का तापमान बढ़ने पर क्यारी से पानी बाहर निकालकर पुनः सिंचाई करें।
- मृदा जनित रोगों यथा तना सड़न, जड़ सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा, बकानी, जीवाणु झुलसा, उकठा आदि से बचाव हेतु *ट्राइकोडर्मा विरिडी* 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा *ट्राइकोडर्मा हरजियेनम* 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 65–75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8–10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- दीमक, सफेद गिडार, सूत्रकृमि, जड़ की सूड़ी, कटवर्म आदि कीटों से बचाव हेतु व्यूबेरिया बैसियाना 1 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2.50 किग्रा./हे. की दर से 65–75 से किग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8 से 10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त आखिरी जुताई के समय खेतों में मिलाकर भूमि शोधन करना चाहिए ।
- उर्द, मूँग व गन्ना की फसलों एवं लीची व आम के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

धान की खेती

- उपरहार भूमि के लिए धान की किस्मों यथा एन.डी.आर. 97, एन.डी.आर. 118, एम.टी.यू. 1010, शुष्क सम्राट, सहभागी के 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- सिंचित भूमि के लिए धान की किस्मों एन.डी.आर. 2064, एन.डी.आर. 2065, एन.डी.आर. 359, एन.डी.आर. 3112–1, सरजू 52, एच.यू.आर. 1304 एवं एच.यू.आर. 1304 के 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- निचली भूमि के लिए धान की किस्मों एन.डी.आर. 9930111, एन.डी.जी.आर. 201, एन.डी.जी.आर. 702, स्वर्णा–सब1 किस्मों के 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- सुगन्धित धान की किस्मों यथा पूसा नरेन्द्र काला नमक1, पूसा नरेन्द्र सी.आर.डी. काला नमक2, एन.डी.आर. 6093 एवं नरेन्द्र लालमती धान के बीज को 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- आचानक बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64–सब1 (पकने की अवधि 110 दिन) एवं सांभा मसूरी–सब1 (पकने की अवधि 145 दिन) के 30 किग्रा0/हे0 बीज की दर से नर्सरी डालें।
- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट 90 प्रतिशत एवं टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्राम मात्रा को 100 ली. पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।

- बीज गलन, झोंका,शीथ ब्लाइट, भूरा धब्बा तथा मिथ्या कण्डुआ रोग से बचाव हेतु 2.50 ग्रा. थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. अथवा कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 ग्रा. अथवा थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. + कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 2 ग्रा. अथवा यथा संभव ट्राईकोडर्मा, 4 से 5 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन करें।

मक्का की खेती

- अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए मक्का की देर से पकने वाली संकर किस्मों यथा गंगा–11, सरताज, एच. क्यू.पी.एम.–5, एच.क्यू.पी.एम.–8, प्रो–316 (4640), बायो–9681, वाई–1402, पी.एस.सी.–740, एन.एम. एच.–920, सीडटेक–740, एन.एम.एच.–713 के तथा संकुल किस्म प्रभात आदि की बुआई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व, पहले 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करना चाहिये तथा बाद में बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।

अरहर की खेती

- सिंचित क्षेत्रों में पश्चिमी उ.प्र. हेतु अरहर की अगेती संस्तुत प्रजाति पारस (पी.ए.–291), मध्य उत्तर प्रदेश हेतु पूसा अरहर–16, सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों यू.पी.ए.एस.–120, टा–21 तथा पूसा–992, पी.ए.–6 की बुवाई 10 जून तक समाप्त करें।
- बुआई से पूर्व यदि बीज शोधित न हो तो एक किग्रा. बीज को 2 ग्रा. थीरम, एक ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा + 1 ग्राम कारबाक्सिन से उपचारित करें। बुआई से पहले हर बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।

जायद फसलों की खेती

- मूंग की फसल में काले सिरवाली सफेद रंग के इल्लियों का आक्रमण देखने को मिल रहा है। इसके शरीर के प्रत्येक खण्ड पर काले रंग के धब्बे देखे जा सकते है। यह इल्लियां छोटे पौधों पर अधिक आक्रमण कर रही है। इनसे फसल सुरक्षा के लिये नीम के तेल का 5 प्रतिशत का घोल बनाकर फसल पर एक सप्ताह के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें या इमामेक्टिन बेजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. की 1 ग्राम मात्रा को दो लीटर पानी में मिलाकर 12 से 15 दिनों के अंतराल पर 2 बार शाम के समय छिड़काव करें।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।

गन्ना की खेती

- चूसक कीटों के प्रकोप होने पर प्रोफेनोफास 40 प्रतिशत + साइपर 04 प्रतिशत को 750 मिली. मात्रा को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. कर दर से छिड़काव करें।
- चोटीबेधक कीट से बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मि.ली. मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से डेचिंग कीर सिंचाई करें।
- जिन किसान भाईयों ने गन्ने के साथ अन्तःफसल के रूप में मूंग की बुवाई की है, पकी फलियों की तुड़ाई कर लें।
- किसान भाई गन्ने में 15–20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई अवश्य करें।

सब्जियों की खेती

- कद्दूवर्गीय फसलों में यदि हरा फुदका एवं सफेद मक्खी कीट 10 की संख्या में प्रति पत्ती/लीफ दिखाई दे तो तुड़ाई उपरांत फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मि.ली. रसायन को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें जबकि तना व फल छेदक कीट के नियंत्रण के लिये फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 1.0 मि.ली. रसायन को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. की दर से लगायें।

- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी या हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतरातल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल में सफेद मक्खी के द्वारा पीत शिरा मोजैक वायरस के प्रसार से रोग फैलता है। इसका प्रकोप पत्तियों एवं फलों पर होता है, पौधे एवं फलों की बढ़वार रूक जाती है। फल एवं पत्तियां पाली पड़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिये ग्रसित पौधें को उखाड़कर जला दे या मिट्टी में दबा दें तथा रोग वाहक कीट को नीला चिपचिपा ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगायें। इसके रासायनिक उपचार में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी

- आम में फुदका/भुनगा कीट के बचाव के लिये इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. नामक कीटनाशी की 1 से 2 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
- लीची के फल को फ्रूट क्रैकिंग से बचाने के लिये शाम के समय निश्चित अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा प्लास्टिक मल्च का प्रयोग करें। इसके अतिरिक्त कैल्शियम नाईट्रेट 10 ग्रा. एवं बोरेक्स 800 मि.ग्रा. का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव भी करें।
- आम में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यु ल्योर ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- फलों की भण्डारण क्षमता बढ़ाने के लिये तुड़ाई से पूर्व चौसा किस्म तथा अन्य देर से पकने वाली किस्मों के लिये 10 दिन के अंतराल पर 3 डाईहाईड्रेटेड कैल्शियम क्लोराइड (221 ग्रा/10 ली. पानी) का छिड़काव करना चाहिये।
- फलों के बाग के रोपण हेतु मई माह में गड्डों की खुदाई पूर्ण कर लें। आम एवं लीची की बाग स्थापना के लिए 10X10 मीटर की दूरी पर 1 घन मीटर, अमरूद, ऑवला, नीबू वर्गीय, बेल एवं बेर के रोपण हेतु 6X6 मीटर की दूरी पर 75 से 100 घन सेन्टीमीटर एवं केला एवं पपीता की खेती के लिए 1.8X1.8 मीटर की दूरी पर 35 घन सेन्टीमीटर आकार के गड्डे की खुदाई करके खुला छोड़ दें, जिससे धूप से कीट एवं रोग के पैथोजन खत्म हो जाते है। गड्डों की खुदाई करते हुए यह ध्यान रखें की गड्डे के ऊपर की आधे गहराई की मिट्टी एक तरफ एवं शेष की मिट्टी दूसरी तरफ बाहर रखें।

पशुपालन

- 1 जून से एच.एस. का टीकाकरण प्रारम्भ होगा। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- मुर्गियों में उनके बाड़े का तापमान गर्मी में 18.26 डिग्री सेल्सियस होना चाहिये, जिसको घटाने के लिये उनके शेड की छत पर बोरा डालकर स्प्रिंकलर से आधे से एक घंटे में तराई करते रहना चाहिये।
- पुशुओं को धूप से बचने के लिये दोपहर में छायादार स्थान पर बांधे तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- दोपहर के समय पशुओं को नहलाने एवं चराई से बचायें।
- पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें, पशुओ को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) न खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीली तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।
- पशु ब्यांने के 1–2 घंटे के अंदर नवजात पशु को खीस अवश्य पिलायें।
- पशुओं को अन्तः कृमिनाशक एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह से आवश्यकता पड़ने पर उपयोग करें।

मत्स्य पालन

- तालाब निर्माण का उपयुक्त समय है जो किसान नये तालाब बनाना चाहते हो या अपने तालाब का सुधार कार्य कराना चाहते है वे मानसून आने के पूर्व निर्माण कार्य पूरा करा लें तथा आगामी मौसम में मत्स्य पालन की तैयारी करें।

- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फिट तक बनाये रखा जाए।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाए।
- वर्तमान में कॉमन कार्प मछलियों का बीज उत्तर प्रदेश मत्स्य विकास निगम या निजी क्षेत्र में स्थापित हैचरियों पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
- मछलियों को निश्चित समय पर ही भोजन दिया जाए।

रेशम

- शहतूत एवं अर्जुन वृक्षारोपण, बागानों एवं नर्सरी आदि की आवश्यकता अनुसार समय–समय पर सिंचाई करते रहना चाहिये।

वानिकी

- गड्ढ़ा भरान 15 जून तक पूर्ण कर लें। वृक्षारोपण हेतु आवश्यक पौधे प्राप्त कर लें। पौधों के रोपण अथवा बिक्री हेतु ले जाने से पूर्व तक खुले क्षेत्र में सिंचाई करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 13 जून, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitra.up.ai पर भी उपलब्ध है। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।

30.05.24

(पीयूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।

23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
47. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

30-05-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव